an>

title: Need to formulate a special strategy to boost horticulture in the Himalayan region.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): श्रीमन्, उत्तराखंड, हिमालय देश के लिए सामरिक दÂिष्ट से हो, देश की एकता-अखंडता की दÂिष्ट से हो, पर्यावरण की दÂिष्ट से हो, जय विविधता की दÂिष्ट से हो, गंगा की दाष्Âिट से हो, चार धाम योजना की दÂिष्ट से हो, हर दÂिष्ट से देश और दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हिमालय सबसे बड़ा युवा पर्वत, बिल्कुल यंग सात लाख वÂाऩ पुराना, बहुत संवेदनशील है। इस हिमालय को भारत भाल भी कहते हैं और देव आत्मा हिमालय भी कहते हैं। यह भारत का गौरव है, सीमाओं का पूहरी है। यह एशिया का वाटर टावर है। इससे न केवल आधा एशिया पेयजल लेता है बल्कि अन्न का उत्पादन भी होता है। मैं समझता हूं कि हिमालय के क्षेत्र केवल पर्वत शृंखला नहीं हैं बल्कि यहां रहने वाले लोग देश के लिए एक पूंजी हैं। यहां के पशु-पक्षी हों चाहे वन पर्यावरण हो, नदी हो, हिमनद हो, प्राकृतिक सौन्दर्य का विÂाय हो, ये सब संकट में हैं। इसलिए आपने देखा है कि वनों में वनाग्नि लगने से अरबों-खरबों रुपये की सम्पति ही नÂिष्ट नहीं हुई बल्कि जैव विविधता को बहुत बड़ा संकट हुआ है। पशु-पक्षी हजारों की तादाद में राख में मिल गए। धरती की ऊÂणता बढ़ी है तो ग्लेशियर पिघल कर पीछे जा रहे हैं। इससे संकट होगा। इसी का परिणाम है कि यहां भूकम्प आता है, भूस्खलन भी आता है। 1991 के भूकम्प और भूस्खलन में चमोली जिला हो, उत्तरकाशी जिला हो, सैंकड़ों लोग हताहत हुए थे। केदारनाथ जैसी आपदा में 24 राज्यों के हजारों लोग हताहत हुए। ऐसी ही आपदा श्रीनगर, जम्मू कश्मीर से लेकर नेपाल तक गई है। हिमालय की टोटल बैल्ट बहुत ही अस्थिर है। यह देश और दुनिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए मैं आपसे विनम्र अनुरोध करना चाहता हूं कि हिमालय जो दुनिया के लिए अमूल्य निधि है, इसकी सुरक्षा बहुत जरूरी है, लोगों की रक्षा बहुत जरूरी है। यह पर्यावरण की दुनिया की पहली पाठशाला है और इसमें दुनिया के लोगों के तन और मन को ठीक करने का भी माद्दा है।

इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि आपदा संभावित विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में पूर्व चेतावनी नेटवर्क की तत्काल स्थापना करे जिसके तहत डॉप्लर रडार हो, लाइटनिंग सेंसर हों, रेनफॉल मोनिटरिंग सेंसर हो, इसके अतिरिक्त आपदा के कार्यक्रमों और क्रियान्वयन करने के लिए अत्याधुनिक तकनीक हो, विशेÂाज्ञतायुक्त सरकारी और गैर-सरकारी संगठन हो जिसमें चाहे पुलिस हो या आईटीबीपी हो, एसएसबी हो, सेना हो, वायु सेना, अंतर्राÂट्रीय संस्थाएं हों, आपदा संस्थाएं प्राधिकरण हो, सभी में समन्वय होना चाहिए। समय रहते इनका काम नहीं हो पाता। पूरी दुनिया में उत्तराखंड में में साढ़े बारह हजार वन ग्राम पंचायतें हैं, डेढ़ लाख से भी अधिक लोग अपने प्राणों को हथेली पर रखकर वनों की रक्षा करते हैं। इनको ट्रेंड होना चाहिए। आईटीबीपी के साथ समन्वय आना चाहिए। इस पर एक अंतर्राÂष्ट्रीय स्तर का संस्थान बनना चाहिए जिससे पूरे हिमालय की रक्षा हो सके।

माननीय सभापति :

श्री कुंवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

श्री सुधीर गुप्ता,

श्री शरद त्रिपाठी और

श्री भैरों प्रसाद मिश्र को डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा उठाए गए विÂषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।